सेक्टर 14 की डॉक्टर बेटी अपने दम पर वायुसेना में बनी फ्लाइट लेफ्टिनेंट

फ़रीदाबाद (म.मो.) सेक्टर 14 की रहने वाली जिगिशा लखनपाल एमबीबीएस की पढाई पूरी करके भारतीय वायुसेवा में बतौर डॉक्टर फ्लाइट लेफ्टिनेंट के पद पर भर्ती हो गयी। दिनांक 22 अक्टूबर 2018 को उन्हें हिंडन वायुसेना स्टेशन पर कमीशन रैंक प्रदान किया गया।

जिगिशा पहली जमात से 12 वीं तक सेक्टर 15 स्थित एपीजे स्कूल में पढी हैं। उन्होंने वर्ष 2011 में 95 प्रतिशत अंकों से 12 वीं की परीक्षा पास की थी। पढाई के अलावा जिगिशा अपने स्कूल की सर्वश्रेष्ठ एथलीट भी रही हैं। पढाई में इतने अच्छे अंक प्राप्त कर लेने के बावजूद सरकार के किसी भी मेडिकल कॉलेज में उन्हें दाखिला नहीं मिला तो उन्हें पूना के एक निजी मेडिकल कॉलेज, भारतीय विद्यापीठ में दाखिला लेना पड़ा। अपनी विलक्षण प्रतिभा के दम पर उन्होंने वहां भी हर वर्ष अच्छे परिणाम दिये और निश्चित समय में परीक्षा पास करके 2016 में लौट आई। दिल्ली के विलिंगडन (राम मनोहर लोहिया) अस्पताल से इन्टर्नशीप पूरी करने के बाद कुछ माह स्थानीय ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज में बतौर जेआर काम किया। अब उनका चयन भारतीय वायुसेना में हो गया।

इस सारी कहानी में गौरतलब बात यह है कि 'बेटी बचाओ बेटी पढाओ' का खोखला नारा देने वाली भारतीय जुमलेबाज पार्टी की सरकार की कहीं कोई भूमिका नहीं। भूमिका तो इनसे पहले वाली सरकारों की भी कोई नहीं रही लेकिन वे इतने बड़े जुमलेबाज़ तो नहीं ही थे।

जिगिशा की कामयाबी के पीछे बड़ी भूमिका उनके माता-पिता की रही है जिन्होंने एपीजे जैसे महंगे स्कूल में उसे पढाया। यदि खर्चा बचाने के चक्कर में बेटी को सरकारी स्कूल में पढाया होता तो वह कभी इतने अच्छे अंकों से 12 वीं पास न कर पाती। उसके बाद निजी मेडिकल कॉलेज में पढाने का मतलब कम से कम 2 करोड़ का खर्चा उन्होंने उठाया। तथाकथित भारतीय संस्कृति, जिसमें बेटी को पराया धन समझा जाता है, कोई मां-बाप आसानी से बेटी पर खर्च नहीं करता। लेकिन जिगिशा के माता-पिता ने उसे बेटे की तरह ही पाला-पोसा है। इसके लिये जिगिशा के साथ-साथ वे भी बधाई के पात्र हैं।

दूसरा व्यवस्थागत गंभीर सवाल यह उठता है कि डॉक्टर बनने के लिये, 12 वीं तक की पढाई का खर्च न भी जोड़ें तो मेडिकल की पढाई पर ही जब कोई 2 करोड़ खर्च करेगा तो क्या एक लाख मासिक वेतन उसे सन्तुष्ट कर पायेगा? यही वह मुख्य कारण है जिसके चलते डॉक्टर भटक कर इधर-उधर मुंह मारने लगते हैं। डॉक्टरों को जनहित, देशहित, समाजहित में सेवा का उपदेश देने से पहले समाज एवं सरकार को पर्याप्त मात्रा में मेडिकल कॉलेज खोल कर उन्हें मुफ़्त मेडिकल शिक्षा देने का जिम्मा लेना चाहिये।

सरकारी जमीन पर किराया वसूल रहे हैं निगमकर्मी व दुकानदार

करनाल : त्यौहारों के मौसम में नगरनिगम की लापरवाही ओर पुलिस की सुस्ती के चलते दुकानदार अपने आगे सरकारी जमीन से मोटा किराया वसूल रहे हैं। इससे शहर में अतिक्रमण बढ़ रहा है ओर लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। शहर के मुख्य बाजारों से गुजरना मुश्किल हो गया है। खास कर कर्ण गेट बाजार के हालात तो काफी खराब हैं। हालत यह है दुकानदार ने अपनी दुकान के आगे नगर निगम की जगह ही फड़ी लगाने के लिये किराये पर दे दी है। यदि यह कहा जाये कि दुकानदार आम के आम गुठलियों के दाम वसूल रहे है तो यह गलत न होगा।

दुकानदार तो दुकानदार नगर निगम के अधिकारी व ट्रेफिक पुलिस भी कम नहीं है। जहां जिसका दांव लगता है रेहड़ी फड़ी वालों से नजराना वसूल रहे हैं। पुरानी सब्जी मण्डी चौक पर पुलिस बूथ बना हुआ है, ठीक पुलिस बूथ के सामने सड़क के दूसरी ओर एक व्यक्ति फड़ी लगा कर जगह घेरे हुये है। रात को जाते समय पुलिस बूथ पर अपना फड़ी का सामान रख कर चला जाता है। और सुबह पुलिस कर्मचारी उसका समान निकाल कर फड़ी लगाने को उसे दे देते हैं। सिलसिला वर्षो से जारी है। हैरानी की बात तो ये है कि उसी जगह सीसी टीवी कैमरा भी लगा हुआ है, लेकिन उच्चाधिकारीयों ने आज तक इसे संज्ञान में नही लिया । जाहिर है यह सब बिना मंथली नजराना के नही हो सकता ।

दूसरी ओर नगर निगम के अधिकारी भी पीछे नही हैं। दुकानदार तो अपनी दुकान के आगे फड़ी लगवाने के पैसे तो ले ही रहे हैं परन्तु उन फड़ी वालों से नगर निगम के अधिकारियों ने भी मंथली बांध ली है। कभी कभार खाना पूर्ति के लिये छोटा मोटा चालान कर देते है ।

कुछ दुकानदारों का कहना है हमारी दुकानों के सामने बैंक होने के कारण लोग अपनी गाड़ियां खड़ी करके बैंक चले जाते है और घटों नही आते। निगम के अधिकारियों शिकायत करते है तो वह कोई कारवाई नही करते। उल्टा कहते है कि हमारा इससे कोई मतलब नही।

इसका खामियाजा आम आदमी को भुगतना पड़ रहा है। शहर के मुख्य बाजार कर्णगेट से लेकर घण्टाघर चौक तक दुकानो के आगे लगी फड़ियों से रास्ता जाम हो रहा है, साथ ही सड़क पर खड़े वाहनों के कारण भी निकलना मुश्किल हो गया है। हालांकि कभी कभार नगर निगम अतिक्रमण हटाओ अभियान चला कर दुकानों के आगे लगी फड़ियों को हटा देते है परन्तु फिर यह फड़ियां लग जाती है। हांलाकि लोग इसे नगर निगम के अधिकारियों की मिलीभगत भी बताते हैं। इसके अलावा बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन, पुरानी सब्जीमंडी व हांसी रोड पर भी अतिक्रमण के चलते यातायात अवरुद्व रहता है। उधर नगर निगम के अधिकारी मानते है कि दुकानदारों ने आगे की सरकारी जगह तक कवर कर रखा है। दुकानदार नगर निगम की जगह को भी किराये पर देकर किराया वसूल रहे है । उन्होंने कहा कि समय -समय पर अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया जाता है परन्तु फिर लोग अतिक्रमण कर लेते हैं। परन्तु भूले से भी वे अपनी मंथली का जिकर नही करते ।

शिक्षा विभाग: सरकारी ग्रांट हड़पने के बाद अब निजी धन पर भी नज़र

फ़रीदाबाद (म.मो.) घोटाले करने में रामबिलास शर्मा शिक्षा विभाग भी किसी से पीछे रहने वालों में नहीं। इस बाबत कई रिपोर्टें 'मज़दूर मोर्चा' में प्रकाशित हुई हैं। पूरी सरकार में व्याप्त भ्रष्टाचार के चलते किसी भी घोटालेबाज़ पर कभी कोई कड़ी कार्यवाही होती नज़र नहीं आई।

इन्हीं घोटालेबाज़ों के गिरोह ने एक निजी खाते की रकम को हड़पने में असफ़ल होने पर स्कूल निदेशालय व सीएम विंडो पर शिकायत भेजी है। शिकायत में कहा गया है कि पूर्व खंड शिक्षा अधिकारी रितु चौधरी जो अब गुड़गांव में उप ज़िला शिक्षा अधिकारी हैं ने अपनी यहां की तैनाती के दौरान एक खाता खोल कर बड़ा भारी घोटाला कर डाला। एक तथाकथित राष्ट्रीय अखबार में, इस बाबत छपवाई गयी खबर में कहा गया कि स्कूल निदेशालय ने इस घोटाले की जांच शुरू कर दी है।

'मज़दूर मोर्चा' ने अपनी जांच में पाया कि अप्रैल 2015 में तत्कालीन खंड शिक्षा अधिकारी रितु चौधरी ने ग़रीब एवं प्रतिभावान बच्चों की सहायतार्थ कुछ शिक्षकों को अपने साथ जोड़ कर निजी तौर पर एक कमेटी बना कर पैसा एकत्र किया था। इस फ़ंड में ढाई लाख स्वयं रितु चौधरी ने व अन्य शिक्षकों ने, किसी ने 20 हज़ार तो किसी ने 10 हज़ार तो किसी ने कितना ही अपनी क्षमतानुसार दान दिया था। दान के इस पैसे को रखने के लिये सराय ख्वाजा के ओबीसी (औरियंटल बैंक ऑफ़ कामर्स) में रितु चौधरी ने अपने नाम से खाता खोला था। करीब 5 लाख की रकम वाले इस खाते के संचालन हेतु 11 दान दाताओं की एक कमेटी भी बनाई गयी थी जो इस फंड के इस्तेमाल का फ़ैसला करेगी। जानकारों के अनुसार रितु चौधरी ने बाकायदा पत्र लिखकर इस बाबत अपने निदेशालय को भी पूरी जानकारी दे दी थी।

खंड शिक्षा अधिकारी बनने से पूर्व जब रितु चौधरी सराय स्थित वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल की प्रिंसिपल थी तो उन्होंने अपने स्कूल के जरूरतमंद छात्रों के लिये भी ऐसा ही एक निजी फ़ंड बना कर रखा था जिससे ग़रीब बच्चों को काफ़ी सहायता मिलती थी। पदोन्नत होने के बाद उन्होंने अपनी योजना को विस्तार देते हुये खंड स्तर पर लागू करने का विचार बनाया था। उसी दौरान मंजीत सिंह नामक एक उप ज़िला शिक्षा अधिकारी ने रितु चौधरी पर दबाव बनाया कि वे उसके ड्राइवर की पत्नी को किसी स्कूल में फ़र्जी तौर पर मिड-डे-मील बनाने की नौकरी दे दें। न मानने पर मंजीत ने उनके खिलाफ़ षडयंत्र रचने शुरू कर दिये। दूसरी ओर मंत्री कृष्णपाल गूजर ने कुछ शिक्षकों को बतौर कार्यकर्ता पाल रखा था जो स्कूल में आते ही नहीं थे। रितु द्वारा की गयी सख्ती एवं मंत्री गूजर की चापलूसी न करने पर वह भी सख्त नाराज़ था। परिणामस्वरूप रितु का यहां से तबादला करा दिया। दो-चार महीने पहले खोला गया 5 लाख का फ़ंड ज्यों का त्यों धरे का धरा रह गया। चूंकि यह फ़ंड रितु ने अपनी निजी क्षमता एवं सामाजिक सहयोग से खोला था जिसमें सरकार का कोई पैसा नहीं लगा था अब अछूता पड़ा है।

यहां का चार्ज छोड़ने से पहले रितु ने अपने निदेशालय को पत्र लिख कर सूचित कर दिया था कि उनके द्वारा बनाये फ़ंड को निदेशालय सम्भाले तथा तय कर दे कि कौन और कैसे इसका प्रयोग करेगा। लेकिन आज तक कोई जवाब नहीं आया। आयेगा भी नहीं क्योंकि यह एक निजी फ़ंड है, इसमें सरकार का कोई पैसा नहीं लगा है। लिहाजा इसका प्रबन्धन एवं इस्तेमाल केवल वह कमेटी कर सकती है जिसने उसे बनाया है। लेकिन इस सब से मौजूदा फ़ंड शिक्षा अधिकारी मुनीष चौधरी को भारी परेशानी हो रही है। उन्होंने इस फ़ंड को इस्तेमाल करने का काफ़ी प्रयास किया था लेकिन असफ़ल होने पर मंजीत सिंह से मिलकर रितु के खिलाफ़ यह शिकायतबाज़ी शुरू कर दी।

एक पत्रकार गणेश शंकर विद्यार्थी भी!

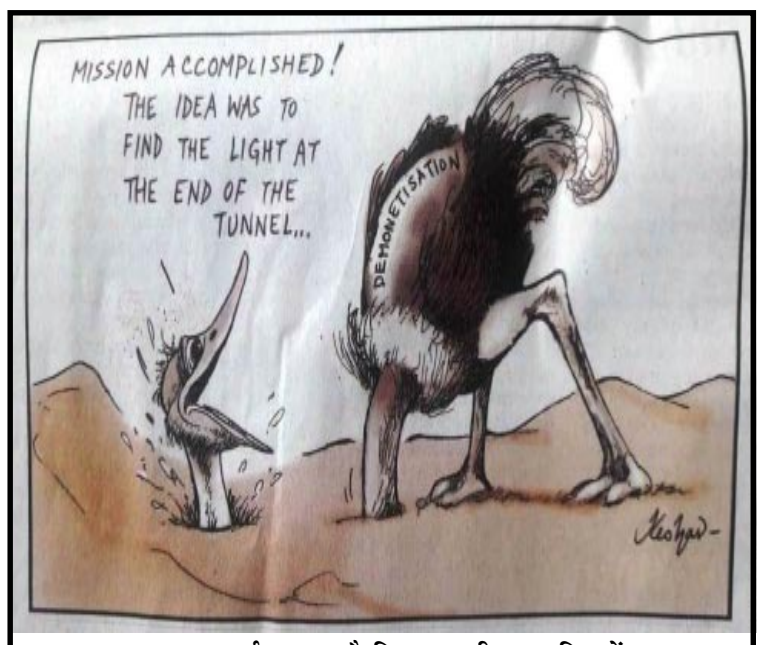

यह कार्टून बताता है कि आज भी पत्रकारिता में गणेश शंकर विद्यार्थियों की कमी नहीं!

स्वर्गीय गणेश शंकर विद्यार्थी का नाम भारत के यशस्वी संपादक ,पत्रकार पुरोधाओं में गर्व के साथ लिया जाता है। मात्र 23 वर्ष की उम्र में अँग्रेजों की गुलामी की जंजीरों से जकड़े देश से गुलामी को उखाड़ फेंकने के लिए 1913 में "प्रताप" नामक समाचार पत्र का प्रकाशन कानपुर के रामनारायण बाजार के तंग गलियों में स्थित एक घनी बस्ती में फीलखाना (या पीलखाना) नामक जगह पर प्रारम्भ किया था । विद्यार्थी जी द्वारा प्रारम्भ किया गया यह समाचार पत्र भारत की गरीबी से अभिषप्त जनता विशेषकर किसानों और मजदूरों का पक्षधर था , उस समय क्रूर अँग्रेज़ी साम्राज्यवादी सत्ता के गरीब भारतीयों पर हो रहे दमन और भारतीय जनता पर हो रहे जुल्म के खिलाफ़ एक सशक्त और निर्भीक समाचार पत्र के रूप में सम्पूर्ण हिन्दी भाषी क्षेत्रों में अत्यन्त लोकप्रिय हुआ था ।

तत्कालीन अँग्रेजी सत्ता और उसके चाटुकार जमींदारों और सामंतों के जुल्मों के खिलाफ एक जबर्दस्त "आवाज" और "धमक" के रूप में यह समाचार पत्र अपनी निर्भीकता की वजह से तत्कालीन भारतीय जनता का बहुत ही लोकप्रिय समाचार पत्र के रूप में अपना स्थान बनाने में पूर्णत: सफल रहा था। 1925 शहीद-ए-आजम भगत सिंह जैसे देश के लाड़ले ,जो बाद के कुछ ही वर्षों बाद देश के लोगों और भारतीय राष्ट्र की आन-बान-शान हेतु और देश को अँग्रेज़ी साम्राज्यवाद से स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले यशस्वी व्यक्तित्व भी इस "प्रताप" नामक समाचार पत्र से जुड़ गये । शहीद-ए-आजम भगत सिंह इस समाचार पत्र में अँग्रेजों के दमनकारी सत्ता के चरित्र से सुरक्षाहेतु "बलवन्त सिंह" के छद्म नाम से अपने यशस्वी , चिन्तनयोग्य ,समयसापेक्ष और निर्भीक विचार लगभग ढाई बर्ष तक लिखते रहे । दूसरे शब्दों में शहीद-ए-आजम भगत सिंह के व्यक्तित्व को और अधिक सुघड़ ,क्रांतिकारी और यशस्वी बनाने और गढ़ने में स्वर्गीय गणेश शंकर विद्यार्थी का अहम् रोल था ।

परन्तु हमें इस बात को बहुत ही अफ़सोस और दुख के साथ ये लिखना पड़ रहा है कि ऐसे अप्रतिम , देशभक्त , समर्पित पत्रकार और हिन्दू-मुस्लिम दंगों की आग के शमन हेतु अपने प्राणों की आहुति देने वाले भारत के इस वीर महान सपूत शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी की कर्मस्थली कानपुर के रामनारायण बाजार के तंग गलियों में स्थित "प्रताप प्रेस" का भवन आज गुमनामी के अँधेरे में आज अपनी "पहचान" तक को तरस रहा है।

वहाँ एक छोटा बोर्ड भी लगाना वर्तमान एहसान फरामोश और कृतघ्न शासकों को गवारा नहीं है ,जहाँ यह लिखा हो कि "स्वर्गीय शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा स्थापित प्रताप प्रेस जिससे प्रकाशित होने वाला यशस्वी समाचार पत्र "प्रताप" यहीं से प्रकाशित होता था ,जिसमें शहीद-ए-आजम भगत सिंह ढाई साल तक नौकरी किए और उस यशस्वी पत्र में लेख लिखे, जिसके विचारों से अनुप्रेरित होकर यह देश 1947 में ब्रिटिश साम्राज्य से मुक्त हुआ और हम समस्त भारतवासी आज स्वतंत्र भारत में सांस ले पा रहे हैं ।

मैं कानपुर की उस पावनस्थली की जर्जर और खण्डहर बनती स्थिति को देखकर अत्यन्त व्यथित और खिन्न मन से लौटा हूँ । अपने इन दोनों "महान सपूतों" की उस कर्मस्थली की जर्जर हालत और वर्तमान सत्ता की उन महान सपूतों की स्मृतिस्थलों के प्रति बेरुखी और बेकद्री की वजह से दयनीय दशा देखकर मेरी आँखों से अश्रुधारा फूट पड़ी थी। इस देश की जनता की उदासीनता और यहाँ के सत्ताधारियों के अमानवीय व्यवहार को मैं किन शब्दों में व्यक्त करूँ, मेरे समझ से परे है ,जो आज के एक अनाम से विधायक की भी शहर के मध्य चौराहे पर उसकी स्मृति हेतु प्राय: आदमकद मूर्ति स्थापित कर देते हैं।

परन्तु अत्यन्त खेदजनक है कि देश के उन महान अमर विभूतियों का स्मृतिस्थल एक "नामपट" तक के लिए तरस रहा है। देश के समस्त प्रबुद्धजनों की तरफ से अमर शहीद स्वर्गीय गणेश शंकर विद्यार्थी को उनके जन्मदिन पर कोटि-कोटि नमन ।

-निर्मल कुमार शर्मा, गाजियाबाद